स्व. स्वयं प्रकाश पर केंद्रित

नवंबर-2020

मूल्य : 35 रुपए

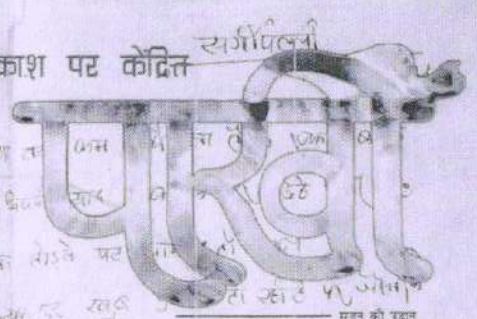

पाखी

सृजन की उड़ान

"अब कहानी प्रतिरोध या जन जागरण की नहीं रही"

पाखी

सृजन की उड़ान

वर्ष : 13, अंक-2, नवम्बर-2020

प्रकाशक :
इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसायटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4692200, फैक्स : 0120-2406445
editor@pakhi.in
subeditor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.com/pakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

प्रति		35.00 रु
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	1000.00 रु
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	10000.00 रु

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसायटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं :
बैंक : CORPORATION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : CORP0000501
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301, उत्तर प्रदेश

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय। स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसायटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिन्टर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा, से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर-63, नोएडा से प्रकाशित।

सम्पादक
अपूर्व जोशी
इस अंक के अतिथि सम्पादक
शैलेय
सहायक सम्पादक
शोभा अक्षर
व्यवस्थापक
अमित कुमार
उप सम्पादक
मनोज चौधरी

आवरण

स्वयं प्रकाश द्वारा प्रख्यात कवि मदन कश्यप को प्रेषित एक चिट्ठी

SELF ATTESTED

कहानी में जिंदगी के अनुभवों की चित्रकारी

समकालीन कहानी के दौर में कथाकार जब कहानी की 'टेक्नीक' और परिवेश पर जोर दे रहे थे, स्वयं प्रकाश का लक्ष्य कथा लेखन की परंपरा से छेड़छाड़ किये बगैर सार्थक कहानी लिखना रहा। उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को अपनी लेखनी से काफी समृद्ध किया। अपने समय में फिरकापरस्त ताकतों के उभार को पहचाना। वोट बटोरने की खातिर साम्प्रदायिकता और जातिगत भेदभाव की राजनीति बहुत कारगर होती है। राजनीति के शिखर पर आसन जमाने का यह सबसे आसान उपाय रहा है। इससे सरकार जनता की समस्याओं और सवालों की जवाबदेही से खुद को बचा लेती है।

डॉ. अखिलेश गुप्ता
जन्म : 1987
युवा लेखक। 'नया ज्ञानोदय', 'मध्य भारती', 'स्त्रीकाल', 'पहल' आदि हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आलोचनात्मक लेख प्रकाशित। संप्रति सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर

ई-2/3, रिवर व्यू कॉलोनी
कोनी, बिलासपुर, छ.ग.-495009
मो. : : 8085913848

स्वयं प्रकाश की लिखी कुछ कहानियों को पढ़ते हुए अक्सर यह महसूस किया जा सकता है कि उनकी कल्पित दुनिया के विरुद्ध जो छोटी-छोटी घटनाएं बेतरतीब ढंग से इस दुनिया में घटित हो रही हैं उन घटनाओं में शामिल मनुष्य की अमानवीयता को थोड़ा-सा ठहरकर उसकी जड़ों को अच्छी तरह से समझने के बाद उसे वह उजागर करते हैं। जिसमें उनकी कल्पना-लोक की दुनिया प्रारंभिक हिन्दी कथा लेखन-परम्परा की तरह किसी 'यूटोपिया' या 'आदर्शवादिता' से संचालित नहीं है। इसी दुनिया में जो अधिक मानवीय है उसका इजहार किये बिना भी वह उनके पक्षधर हैं। चाहे वे परम्परागत हों या आधुनिक। इस दौरान अपनी जिन्दगी के अनुभवों से हासिल उनकी पारखी नजर अमानुषिकता के नये बनते और जड़ जमा चुके सारे तन्तुओं को उघाड़ कर रख देती है। 'उन्माद भंजन' कहानी में स्वयं प्रकाश ने इन दोनों दुनिया को आमने-सामने रख दिया है-

'अच्छे घरानों में बच्चों को बचपन से सिखाया जाता है, कैसे दूसरों से काम लेना... कब क्या बोलना, कब क्या नहीं बोलना... किसको मन की बात बताना, किसको नहीं... यानी तुम्हारी भाषा में बेईमानी कैसे करनी, चीटिंग कैसे करनी? खास स्कूलों में उन्हें भेजा जाता है... वहां सिखाया जाता है कि तुम्हारे काम क्या-क्या हैं, औरों के काम क्या-क्या हैं? तुम्हारे लिए सही-गलत क्या है, औरों के लिए सही-गलत क्या है, वगैरह। तो देखो, उन बच्चों के सामने कभी अंतरात्मा का संकट नहीं होता। दे आर रियली ब्रिलिएंट एंड ऑफकोर्स सक्सेसफुल। इन मोस्ट ऑफ द केसेस।'

'लेकिन सर, ईमानदारी...?'

'कहां है ईमानदारी इस देश में? पॉलिटीशियंस? नौकरशाही? न्यायपालिका? पत्रकार? कलाकार? सामाजिक कार्यकर्ता? सामाजिक संस्थाएं? कौन है ईमानदार? किसे

काफ्का के संदर्भ में कुंवर नारायण का कहना है कि 'वह जीवन भर 'मनुष्य' के बारे में लिखता रहा और वह मनुष्य काफ्का स्वयं था।' ठीक इसी तरह 'चौथा हादसा' कहानी में जिस मनुष्य की कथा है वह मनुष्य स्वयं प्रकाश खुद थे। देश में हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक वैमनस्य लोगों के जेहन में किस कदर रच-बस गई है उसका प्रामाणिक और यथार्थ ब्यौरा इस कहानी में दर्ज है। स्वयं प्रकाश निजंधरी कथाओं और मिथकीय चरित्रों को कहानियों में लोककथा की भांति कथा को गति देने के लिए प्रयोग करते थे। कथाओं में इन्हें कभी हावी होने नहीं दिया। जादुई यथार्थवादी कहानियों की तरह वह इनके सधे हुए इस्तेमाल से कथा को रोचक बना देते थे। 'गौरी का गुस्सा' इसी ढंग पर आधारित कहानी है। उनकी अधिकांश कहानियों में भारतीय श्रमिक और वंचित तबकों की एक करुण आहट निरंतर सुनी जा सकती है। उनका आह्लादित मन व्यंग्य के सहारे कई बार कथाओं में फूट पड़ता था। प्रेमचंद याद आ रहे हैं। बेहद गरीबी और दुख के आलम में खुशियों की झलक का खोज लेने की कला में उनका कोई सानी नहीं रहा। यह भी कथा कहने का एक ढंग है, जिससे कथा लोगों के दिलो-दिमाग में रच-बस जाती है। स्वयं प्रकाश का ध्यान इस कलात्मक शैली की ओर नहीं गया।

उन्होंने लगभग सभी कहानियों में हमारे समय की असाधारण समस्याओं की ओर भरपूर ध्यान खींचा। किसी भी घर या परिवार में क्रियाशील सदस्य जिस पर परिवार की आजीविका टिकी हुई है- उसकी अकाल मृत्यु हो जाने पर परिवार में गुणात्मक परिवर्तन घटित होने लगता है। उत्तरदायित्व का भार असमय और अचानक कइयों के कंधों पर पड़ने से परिवार में छिपी बहुत-सी प्रतिभाओं की भी 'अकाल मृत्यु' हो जाती है। गरीबी भी कई प्रतिभाओं की अकाल मृत्यु का कारण तो है ही। उनकी 'अकाल मृत्यु' कहानी इसी साधारण-सी लगने वाली असाधारण घटना पर केन्द्रित है :

'राधेश्याम ने इम्मी को गले लगा लिया और कहा, 'तेरे पिताजी की डेथ का बहुत अफसोस हुआ इम्मी।' इम्मी बोला, 'सब लिखाकर लाते हैं भैया। जब खत्म हो जाती है तो हो जाती है। फिर रोओ चाहे छाती कूटो, चाहे जो भी करो।'

इम्मी अपनी उम्र से बहुत बड़ा लग रहा था और एकदम आदमियों की तरह बोल रहा था। हम लोग चुपचाप और मुंह लटकाए बाहर निकल गए और चले आए।

कहानी में असाधारण समस्याओं को साधारण लहजे में कैसे प्रभावशाली बनाया जा सकता है- स्वयं प्रकाश यह बखूबी जानते थे। लोक की 'रिदम' और 'मूड्स' को पहचानने में वह उस्ताद रहे। मनुष्यता की छोटी-से-छोटी निशानी पर दास्तान रचने का उनका अंदाज पाठकों को प्रीतिकर अपनत्व से भर देता है। इस भौतिक संसार में अनुपस्थिति के बावजूद अपनी रचनाओं के सहारे पाठकों के दिलों में वह रच-बस गए हैं।

❖❖❖

पुस्तकें पहुंची

'एक और उर्मिला'

लेखिका डॉ. जयंती त्यागी की चिंता समाज से लुप्त होती मानवीय संवेदनाओं को लेकर है। डॉ. जयंती लिखती हैं कि, 'मैं देखती थी कि समाज में कुछ लोग अपनी राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा और देश सेवा के नाम पर अपनी निहायत जरूरी जिम्मेदारियों और मानवीय संवेदनाओं की ओर से मुंह मोड़ लेते हैं। वे यह भी भूल जाते हैं कि जीवन पथ पर चलते हुए उन्होंने जिसका हाथ थामा था, वह भी उन्हीं की जिम्मेदारी है। समाज और राष्ट्र से अलग नहीं है वह व्यक्ति।'

डॉ. जयंती की यह नयी किताब जो उपन्यास है वह ऐसी ही व्यथाओं और विह्वलता पर प्रश्न है। 'एक और उर्मिला' उपन्यास की नायिका भी नायक की उपेक्षा की शिकार होकर जिस प्रकार जीवन की आंधियों के थपेड़े खाती है उससे हर सहृदय का हृदय उद्वेलित हो उठेगा किन्तु जिस साहस से वह इन झंझावतों से उबरी है उसे देखकर नायिका पर गर्व के साथ समाज के अन्य स्त्रियों को अपने जीवन की कठिनाईयों से जूझने की प्रेरणा भी मिलेगी।

❖❖❖

-शोभा अक्षर

SELF ATTESTED